प्राक्कथन

मसीह ने अपनी कलीसिया कैसे स्थापित की?

पृथ्वी पर मसीह के जीवन का एक अद्‌भुत गुण यह है कि उसने अपने लिए यहां कुछ जोड़ने की इच्छा नहीं की। नये नियम में कहीं भी उसके कोई मकान बनाने, किसी प्रकार के भवन की मरम्मत करने या भूमि खरीदने की बात पढ़ने को नहीं मिलती। सुसमाचार की पुस्तकों में उसके कभी किसी प्रकार का कपड़ा, औजार या भोजन खरीदने की बात नहीं की गई। जब वह इस संसार में था और, एक अर्थ में यहां का नागरिक ही था, तो उसके पास कोई घर नहीं था। वह संसार में था, परन्तु संसार उसमें नहीं था; वह संसार में इसके एक भाग के रूप में रहता था, पर उसने संसार को अपने भीतर नहीं रहने दिया। पृथ्वी पर, वह विदेशी भूमि में एक अजनबी, अर्थात एक मुसाफिर की तरह रहता था, जिसका मोह और जीवन किसी दूसरे संसार से था।

मसीह ने ''मेरा'' और ''मुझे'' जैसे अधिकारात्मक शब्दों का बहुत कम प्रयोग किया था। उसने ''मेरे चेले'' (यूहन्ना 8:31), ''मेरे पिता'' (मत्ती 26:39), ''मेरी देह'' (मत्ती 26:26), ''मेरा लहू'' (मत्ती 26:28), ''मेरी बातें'' (लूका 6:47), ''अपनी कलीसिया'' (मत्ती 16:18) अवश्य कहा है। अपनी देह, लहू और बातों के उसके हवाले आत्मिक संदर्भ में ही थे जिनमें कोई व्यक्तिगत अभिलाषा दिखाई नहीं देती थी।

सुसमाचार की पुस्तकों के अनुसार, मसीह पृथ्वी पर कोई कॉलेज, ईंट-पत्थरों का मकान, या दौलत नहीं बल्कि अपनी सेवकाई की एकमात्र व्यक्तिगत सम्पत्ति, कलीसिया का एक स्थाई विस्तार छोड़कर जाना चाहता था (मत्ती 16:18)। उसने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई परमेश्वर के राज्य के आने के प्रचार से आरम्भ की (मत्ती 4:17), और राज्य के प्रचार से समाप्त की (प्रेरितों 1:3)। उसने संकेत दिया कि उसके द्वारा स्थापित कलीसिया परमेश्वर के राज्य का सांसारिक रूप होगी; इस प्रकार, इस अर्थ में, वह परमेश्वर के राज्य की तुलना अपनी कलीसिया से कर पाया (मत्ती 16:16-18)।

क्योंकि केवल कलीसिया ही एक ऐसी चीज़ है अर्थात एकमात्र सम्पत्ति जिसे मसीह वास्तव में छोड़कर गया था, इसलिए इसका अर्थ यह है कि उसके लिए कलीसिया का एकवचन महत्वपूर्ण था और हमारे लिए भी होना चाहिए। हमारी सबसे बड़ी इच्छा उसकी कलीसिया के रूप में बनना और रहना होनी चाहिए।

इस सबके प्रकाश में, हमारे लिए एक प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है कि ''हम उसकी कलीसिया में प्रवेश कैसे कर सकते हैं और उसकी कलीसिया बनकर कैसे रह सकते हैं ?'' यदि हम यह खोज करें कि मसीह ने आरम्भ में अपनी कलीसिया की स्थापना कैसे की तो हमें इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। जब हमें यह पता चल जाएगा कि मसीह ने वास्तव में अपनी कलीसिया कैसे स्थापित की, तो हम मान जाएंगे कि हम आज उन स्थानों में जहां पर कलीसिया नहीं है, उसकी कलीसिया कैसे स्थापित कर सकते हैं और हमें अहसास होगा कि हम जहां भी रहें उसकी कलीसिया के विश्वासी सदस्य बनकर रह सकते हैं।

अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए, मसीह ने अपने पुनरुत्थान के बाद, पिन्तेकुस्त के दिन अपनी कलीसिया की स्थापना की थी (मत्ती 16:18; प्रेरितों 2)। उसने इसे कैसे स्थापित किया ?

सुसमाचार के प्रचार के द्वारा

यीशु की योजना में अपनी कलीसिया को स्थापित करने का सबसे पहला कदम सुसमाचार का प्रचार था। पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों की एकत्र हुई भीड़ में परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उद्धार का ''सुसमाचार'' अर्थात ''शुभ समाचार'' बताया गया था।

इस ऐतिहासिक दिन का आरम्भ प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बहाये जाने से हुआ था। मसीह ने पवित्र आत्मा के इस तरह बहाये जाने की प्रतिज्ञा की थी और अब वह प्रतिज्ञा पूरी की गई थी (प्रेरितों 1:4,5; 2:1-4)। जिस कारण, प्रेरितों ने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से सामर्थ पाकर वहां उपस्थित लोगों की सभी भिन्न-भिन्न भाषाओं में परमेश्वर के अद्‌भुत वचन कहे थे (प्रेरितों 2:6-8,11)। फिर, मसीह द्वारा पतरस को दी गई प्रतिज्ञा को पूरा करने के एक भाग के रूप में (मत्ती 16:19), पतरस ने मसीह के परमेश्वर की ओर से होने के बारे में एक विस्तृत संदेश दिया (प्रेरितों 2:14-36,40)।

अपने संदेश का परिचय देते हुए, पतरस ने भीड़ को समझाया कि जो कुछ उस दिन हो रहा था वह योएल द्वारा की गई भविष्यवाणी का पूरा होना ही था (प्रेरितों 2:15-21)। उसके संदेश का मुख्य भाग इस बात पर केन्द्रित था कि कैसे मसीह अपने आश्चर्यकर्मों (प्रेरितों 2:22) अपने पुनरुत्थान (प्रेरितों 2:24), भविष्यवाणी के पूरा होने (प्रेरितों 2:25-31, 34, 35), गवाहियों (प्रेरितों 2:32), और पवित्र आत्मा के बहाये जाने (2:33) के द्वारा प्रभु भी और मसीह भी प्रमाणित हुआ। पतरस ने अपने संदेश को इस निर्णायक निष्कर्ष के साथ समाप्त किया: ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (प्रेरितों 2:36)।

पिन्तेकुस्त के उस दिन, संसार की आंखें रोमी साम्राज्य की गतिविधियों पर लगी होंगी, पर स्वर्ग के दृष्टिकोण से संसार की सबसे महत्वपूर्ण घटना यरूशलेम में घट रही थी जहां सुसमाचार का पहली बार प्रचार हो रहा था! परमेश्वर की समस्त योजना, पुराने नियम के युग की समस्त भविष्यवाणियां मसीह के पृथ्वी पर के जीवन की सारी तैयारी और सेवकाई परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार के प्रचार पर केन्द्रित होकर अर्थात उसमें इकट्ठी होकर

प्रकट हुई थी। नई वाचा लागू हो गई थी, और सुसमाचार वास्तविकता बन चुका था।

इस संदेश के प्रचार की घटना से अवश्य ही शैतान और उसके सारे दूत तो कांप उठे होंगे पर स्वर्ग में आनन्द हो रहा होगा। मसीह ने अपने सुसमाचार के इस प्रचार द्वारा कलीसिया को स्थापित किया; और इसके बाद से, उसकी कलीसिया इसी संदेश के प्रचार से संसार के अन्य स्थानों में स्थापित होती रहेगी।

नीचे दिए गए दृश्य की कल्पना करके सुसमाचार के प्रचार के महत्व पर विचार करें। न्याय के दिन परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़ा होने वाला एक व्यक्ति जो जीवन भर अधार्मिक ही रहा था। उसने कभी प्रभु की इच्छा को जानने का प्रयास नहीं किया, कभी परमेश्वर की आराधना नहीं की और न कभी मसीही जीवन जीने का प्रयास किया। जीवनभर वह अपने काम में, मनोरंजन में, परिवार का पोषण करने में और जिस समाज में वह रहता था उससे सम्बन्ध सुधारने में ऐसे लगा रहा जैसे परमेश्वर के प्रति उसका कोई दायित्व ही न हो। परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होने पर परमेश्वर उससे कहता है, ''जीवन में एक बार तू ने सचमुच पृथ्वी पर मेरा काम बहुत अच्छा किया है।'' वह व्यक्ति हैरान होता हुआ उत्तर देता है, ''हे प्रभु, आप तो जानते ही हैं कि मैं बिल्कुल भी धार्मिक नहीं था। जीवन भर मैं कुछेक धार्मिक सभाओं में गया हूं, परन्तु मैंने उन सभाओं में कभी आराधना नहीं की। मेरा जीवन तो स्वार्थ से भरा था और अपनी ही योजनाओं और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए समर्पित था। मुझे याद नहीं कि मैंने कभी आपके लिए पृथ्वी पर कोई काम किया हो। आपके लिए कौन सा कार्य मैंने कब किया?''

परमेश्वर उस आदमी को बताता है, ''जिस नगर में तू रहता था वहां एक कोने में तेरी छोटी सी दुकान होती थी। एक दिन एक आदमी ने रुककर तुझ से पूछा था, 'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि मसीह की कलीसिया इस नगर में आराधना कहां करती है? मुझे लगता है कि वे कहीं पास ही आराधना करते हैं।' तुमने उसे कलीसिया की आराधना करने का स्थान बताया था। वह आदमी मेरा एक प्रचारक था। वह उस सुबह उस मण्डली में मेरे अनुग्रह का सुसमाचार सुनाने के लिए समय पर पहुंच गया, जिसके द्वारा उस वचन को सुनकर उसे मानने वालों के उद्धार के लिए मैंने अपना काम किया था। तुझे उस समय इस बात का ज्ञान नहीं था, पर तुम संसार में चलने वाले उस महान कार्य के लिए एक छोटी सी जोड़ने वाली कड़ी का काम कर रहे थे। संसार की दृष्टि में वाशिंगटन डी. सी. या किसी अन्य राष्ट्रीय राजधानी में होने वाली घटनाएं संसार की महत्वपूर्ण घटनाएं हैं, परन्तु उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण घटना उस छोटी सी चर्च बिल्डिंग में हो रही थी जहां मेरे उद्धार के सुसमाचार का प्रचार हो रहा था। मेरे प्रचारक को तुझ द्वारा रास्ता बताने से कितने लोग वचन सुन सके थे। पृथ्वी पर तेरा सबसे अच्छा काम यही था।''

पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे'' (1 कुरिन्थियों 1:21)। प्रेरितों 2 में पतरस के प्रचार से मसीह की अन्तिम वसीयत और नियम लागू हो गए और मसीही युग का आरम्भ हो गया।

डॉ. जेम्स डी. बेल्स ने प्रेरितों 2 अध्याय को ''बाइबल का धुरा'' कहा है; प्रेरितों 2 से पहले होने वाली सभी बातें इस अध्याय की ओर ही संकेत करती हैं, और प्रेरितों 2 अध्याय के बाद होने वाली सभी घटनाएं इसकी ओर ध्यान दिलाती हैं। नि:संदेह, उसने सही कहा है।

कलीसिया का आरम्भ सुसमाचार के प्रचार से ही हुआ था। मसीह की जो कलीसिया उस पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित हुई थी वह किसी नई जगह पर केवल उसी सुसमाचार के प्रचार से स्थापित हो सकती है जिसका प्रचार पतरस ने किया था। दूसरे ढंग से कहें तो, एक किसान दूसरे किसान द्वारा उगाई गई टमाटर की फसल को तभी उगा सकता है यदि उसने टमाटर का वही बीज बोया हो जो दूसरे किसान ने बोया था। वही कलीसिया पाने के लिए जो मसीह ने बनाई थी, हमें भी उसी सुसमाचार का प्रचार करना आवश्यक था जिससे आरम्भ में कलीसिया स्थापित हुई थी।

सुसमाचार की आज्ञा मानने से

यीशु द्वारा अपनी कलीसिया को स्थापित करने की योजना का दूसरा कदम सुसमाचार की बात मानना है। सुनाए गए सुसमाचार को यदि वहां उपस्थित लोग न मानते तो उसकी कलीसिया कभी स्थापित नहीं होनी थी।

पतरस ने अपने संदेश के प्रमाण का एक स्पष्ट निष्कर्ष निकाला जिसे सब भले मनों को मानना पड़ेगा: कि यीशु को ''प्रभु भी और मसीह भी'' ठहराया गया था (प्रेरितों 2:36)। तब सुनने वालों की भीड़ ने पुकारकर कहा था, ''हे भाइयो, हम क्या करें?'' (प्रेरितों 2:37)। उनके हृदय परमेश्वर के वचन से ''छिद गए'' या टूट गए थे; पवित्र आत्मा के द्वारा सुनाए गए वचन को उन्होंने मान लिया था। पतरस ने अपने संदेश में उनमें दोष नहीं निकाला था: उसने प्रकट करने वाले वचन के द्वारा उनका दोष दिखाया जो जीव और आत्मा को, और गांठ-गांठ, और गूदे-गूदे को अलग करके वार-पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांच लेता है (इब्रानियों 4:12)।

उन यहूदियों को जो प्रताड़ित हुए विवेक तथा हृदय छिदने के कारण पुकार उठे थे, पतरस का यह उत्तर था: ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। मसीह ने प्रेरितों को दी अपनी अंतिम आज्ञा में उद्धार की तीन शर्तें बताई थीं: विश्वास, मन फिराव और बपतिस्मा (मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47; मत्ती 28:19, 20)। पतरस ने उनके प्रश्न के उत्तर में विश्वास का उल्लेख नहीं किया था, क्योंकि दिशा पाने के लिए उनकी पुकार ही यह संकेत थी कि संदेश को सुनकर उन्हें विश्वास हो गया था। उसने मन फिराव और बपतिस्मा की दो शर्तों का विशेष रूप से उल्लेख किया जो अभी पूरी करनी बाकी थीं। जो क्षमा उन्होंने मांगी थी और जिसके लिए वे याचना कर रहे थे, वह यीशु की उन आज्ञाओं को पूरा करने पर ही उसके लहू के द्वारा दी जानी थी। फिर, उद्धार पाए हुए होने के कारण, उन्हें स्वर्ग के उपहार अर्थात पवित्र आत्मा दिया जाना था।

लूका ने लिखा है, ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया;

और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए'' (प्रेरितों 2:41)। कलीसिया में प्रेरितों को इसकी नींव का एक भाग बनाया गया था (इफिसियों 2:20)। इन तीन हज़ार लोगों द्वारा सुसमाचार को पूरी तरह से मान लेने पर, पवित्र आत्मा द्वारा उन्हें यीशु मसीह और प्रेरितों की नींव पर एक-एक करके आत्मिक रूप से लगाया गया था (1 कुरिन्थियों 3:11)। इस प्रकार, कलीसिया का जन्म हुआ या यह अस्तित्व में आई थी। उस दिन से आज तक, कोई भी कहीं भी जब उसी सुसमाचार को मानता है जो उन तीन हज़ार लोगों ने माना था, तो उसे उसी कलीसिया में मिलाया जाता है, और कलीसिया का वह बड़ा ढांचा जो यीशु तथा प्रेरितों की नींव पर खड़ा है और बड़ा होता रहता है।

मई 1993 में, डोनेट्स्क, यूक्रेन में पच्चीस मसीहियों ने मसीह के लिए एक कैम्पेन (अभियान) में योगदान दिया था। हमारी इच्छा उस नगर में प्रभु की कलीसिया स्थापित करने की थी। हम व्यक्तिगत शिक्षा, टेलीविजन संदेश और एक लैक्चर हॉल में रात को प्रचार करने के लिए एकत्रित हुए। अपने प्रचार तथा इस कार्यक्रम में हमने वही सुमसाचार सिखाना चाहा जिसका प्रचार पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन किया था। हमने लोगों से उसी प्रकार मसीही बनने के लिए कहा जैसे पतरस ने कहा था अर्थात विश्वास करके, मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर। दस दिन के इस अभियान में, 122 लोगों ने मसीही बनने की इच्छा व्यक्त की। एक रात में 35 लोग आए। हमने उनको जो बपतिस्मा लेने आए थे ज़ोर देकर कहा कि वे किसी सांप्रदायिक कलीसिया में शामिल नहीं हो रहे हैं; बल्कि मसीह के सुसमाचार को हृदय से मानने के कारण, उन्हें प्रभु द्वारा ही अपनी कलीसिया में मिलाया जा रहा है, जिसकी स्थापना उसने पिन्तेकुस्त के दिन की थी।

मसीह की इस नई कलीसिया ने आराधना सभा के लिए एक थियेटर की दूसरी मंजिल किराये पर ले ली। प्रभु के अन्तिम दिन हम सब उनके साथ थे, किराये का वह कमरा खचा-खच भरा हुआ था। हमने इकट्ठे प्रभु भोज लेकर, इकट्ठे गीत गाकर, इकट्ठे प्रार्थना करके, अपनी आमदनी में से चंदा देकर, और सुसमाचार का संदेश सुनकर मसीह की मृत्यु के द्वारा अपने उद्धार का आनन्द लिया।

दस दिनों के थोड़े से समय में ही, सुसमाचार के प्रचार और सुसमाचार को मानने से भले मन वाले लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाने से डोनेस्क में कलीसिया स्थापित हो गई थी। ये 122 लोग उस कलीसिया में मिलाए गए थे जिसे हमारे प्रिय प्रभु ने पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित किया था जैसा कि प्रेरितों 2 अध्याय में लिखा है।

मान लीजिए कि हम प्रचार करके, शिक्षा देकर और प्रार्थना सभाएं करके यह अभियान चलाते, परन्तु सुसमाचार किसी ने न माना होता क्या डोनेस्क में कलीसिया स्थापित हो जाती? उत्तर स्पष्ट है, कि नहीं? कलीसिया वहां स्थापित नहीं हो सकती थी। भावनाएं कितनी भी अच्छी हों, व्यापक योजनाएं हों, और व्यक्तिगत समर्पण हो, जब तक लोग नये नियम के सुसमाचार को नहीं मानते तब तक कलीसिया की स्थापना नहीं हो सकती।

मसीह ने उन तीन हज़ार लोगों द्वारा सुसमाचार को ग्रहण करने पर अपनी कलीसिया की स्थापना की। उसकी कलीसिया कहीं भी स्थापित हो सकती है जहां उसी सुसमाचार का

प्रचार किया जाए जिसका प्रचार पतरस ने किया था और उस सुसमाचार को लोग वैसे ही मानें जैसे पिन्तेकुस्त के दिन माना था। मसीह ने आरम्भ में अपनी कलीसिया की स्थापना ऐसे ही की थी, और आज भी कलीसिया को स्थापित करने का उसका यही ढंग है।

सुसमाचार के अनुसार जीकर

अपनी कलीसिया को स्थापित करने की यीशु की योजना के तीसरे कदम को सुसमाचार के अनुसार रहना कहा जा सकता है। सुसमाचार को मानने वाले लोगों का जीवन सुसमाचार के अनुसार ही होता था; इस कारण, मसीह की कलीसिया में जीवन था।

मसीही बनने वालों के विषय में लूका ने कहा है, ''और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे'' (प्रेरितों 2:42)। वे केवल मसीह की कलीसिया ही नहीं बने बल्कि उस दिन से लेकर मसीह की कलीसिया बनकर रहते भी थे।

मसीहियों के इन आरम्भिक जीवनों से पता चलता है कि सुसमाचार के अनुसार रहने के लिए वचनबद्धता आवश्यक है। उन्होंने अपने आपको प्रेरितों की शिक्षा, संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना के लिए समर्पित कर दिया था। वे आरम्भ करके शीघ्र ही थक नहीं गए थे; बल्कि वे परमेश्वर की सच्चाई के प्रति समर्पित थे। वे लगातार परमेश्वर की आराधना करते थे क्योंकि आराधना उनके जीवन का एक ढंग बन गई थी। मसीही बनने का अर्थ एक नए मार्ग पर आने की तरह था जिस पर उन्होंने अपने शेष जीवन चलते रहना था।

सुसमाचार के अनुसार रहने के लिए दया का होना आवश्यक था। लूका कहता है, ''वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे'' (प्रेरितों 2:45)। वे दूसरों से यह नहीं कहते थे, ''आप मेरी मदद करेंगे?'' बल्कि, वे आस-पास के ज़रूरतमंदों से पूछते थे, ''मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं?'' करुणा से भरा हुआ मसीह उनके बीच रहा था, और वही करुणा उनके उद्देश्यों और कामों में दिखाई देती थी।

आरम्भिक मसीही एकता बनाकर भी सुसमाचार के अनुसार रहते थे। लूका लिखता है, ''और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं'' (प्रेरितों 2:44)। उसने आगे लिखा है, ''और विश्वास करने वालों की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे...'' (प्रेरितों 4:32)। सुसमाचार को मानने पर उन्हें परमेश्वर के आत्मा से आत्मिक एकता में बांध दिया गया था, और वे उस एकता के लिए अर्थात आत्मा के संदेश को हृदय से मानकर, निष्कपट, निःस्वार्थ और एक दूसरे के प्रति निष्कपट चिंता से बनाए रखते थे।

मसीह की कलीसिया आज कहीं भी हो सकती है जहां लोग सुसमाचार को सुनकर, इसे मानकर, इसके अनुसार रहने के लिए तैयार हों। कई वर्ष पूर्व हार्डिंग कॉलेज में पढ़ाई के दौरान मैं कई बार स्प्रिंगफील्ड, आरकैंसॉ में जाकर प्रचार करता था। वहां की कलीसिया बहुत छोटी थी, परन्तु आकार में छोटी होने के बावजूद यह कलीसिया आत्मा में मजबूत थी। इस कलीसिया में बारह महिलाएं थीं। मण्डली में कोई पुरुष नहीं था, महिलाएं ही

अपने आप इस मण्डली को चलाती थीं। कमरे में मेरे साथ रहने वाला टैरी सीमैन मेरे साथ जाता और हम उनकी आराधना सभा में अगुआई करते थे। मैं जब प्रचार करता था, तो टैरी गाने में अगुआई करता, प्रार्थनाएं करता और प्रभु भोज देता। जब टैरी प्रचार करता, तो मैं आराधना की दूसरी बातों का ध्यान रखता था।

ये महिलाएं बहुत कठिन परिस्थिति में थीं। उनके पास सहायता के लिए कोई नहीं था, परन्तु वे मसीह की कलीसिया के रूप में बनी रहीं। जब उनके पास कोई प्रचारक नहीं था, तो बुधवार की शाम वे मसीही स्त्रियों के एक समूह में गातीं, प्रार्थना करतीं, और बाइबल अध्ययन करतीं। आदर्श परिस्थितियां न होने के बावजूद भी, वे सुसमाचार के अनुसार रहती रहीं।

यदि आपको कभी स्प्रिंगफील्ड, आरकैंसॉ जाने का अवसर मिले, तो आप देखेंगे कि मसीह की कलीसिया आज भी वहां इकट्ठी होकर आराधना करती है। आप पाएंगे कि वह कलीसिया मज़बूत और सक्रिय है। आज भी यह इतनी बड़ी तो नहीं है, पर यह विश्वासी और मज़बूत है। स्प्रिंगफील्ड की कलीसिया शायद आज न होती यदि वे विश्वासी महिलाएं जो कठिन परिस्थितियों के बावजूद भी सुसमाचार के अनुसार जीवन बिताती थीं उसमें न होतीं। वे जानती थीं कि किसी समाज में कलीसिया के बने रहने के लिए उन्हें कितना कष्ट उठाना पड़ा था।

हमने कई सुसमाचार सभाओं के बारे में सुना है जिनमें कई लोगों ने बपतिस्मा लिया होगा। उन्हें परमेश्वर के आत्मा के द्वारा परमेश्वर के राज्य में जन्म दिया गया था और मसीह की कलीसिया आराधना के लिए इकट्ठी होने लगी। पहले ऐसा लगा था कि वहां कलीसिया स्थापित हो गई है परन्तु कैम्पेन के समाप्त होने और कैम्पेन चलाने वालों के घर लौटने पर, नये मसीही निराश हो गए। शीघ्र ही उनकी आराधना सभा की संख्या कम होने लगी, अन्त में कलीसिया वहां से खत्म हो गई। सब लोगों ने सुसमाचार के अनुसार जीवन बिताना त्याग दिया और वहां कलीसिया का अस्तित्व खत्म हो गया। मसीह की कलीसिया वहां रह ही नहीं सकती जहां लोगों का जीवन सुसमाचार के अनुसार न हो। मसीह ने पिन्तेकुस्त के दिन उन लोगों से अपनी कलीसिया स्थापित की जिन्होंने सुसमाचार को माना था, और आज किसी नई जगह पर कलीसिया की स्थापना वैसे ही होती है जैसे यरूशलेम में हुई थी। इस नियम का कोई अपवाद नहीं है। यदि हमारे समाज में कलीसिया को बने रहना है, तो हमारे लिए सुसमाचार को मानकर इसके साथ जीवन बिताना आवश्यक है।

सारांश

फिर, मसीह ने अपनी कलीसिया कैसे स्थापित की? उसने सुसमाचार के प्रचार, इसे मानने और इसके अनुसार जीवन बिताने के द्वारा इसकी स्थापना की। हमारे लिए प्रासंगिकता स्पष्ट है: कलीसिया आज भी वैसे ही स्थापित होती है। जहां उसी सुसमाचार को सुनाया जाता है उसी सुसमाचार को माना जाता है और उसी सुसमाचार के अनुसार लोग रहते हैं वहां कलीसिया जिसकी स्थापना मसीह ने पिन्तेकुस्त के दिन की थी, स्थापित होती और बनी रहती है।

नये नियम के सुसमाचार को मानें, इसमें जीवन बिताएं, तो आप मसीह की कलीसिया बन जाएंगे।

एक प्रचारक की कहानी बताई जाती है जो विवाह पर संदेश दे रहा था। वह इस विचार को ज़ोर-ज़ोर से पीट रहा था: ''तुम परमेश्वर की योजना को जानते हो कि एक पुरुष के लिए केवल एक ही स्त्री, और एक स्त्री के लिए केवल एक पुरुष हो यही परमेश्वर की योजना है। तुम इसमें कोई सुधार नहीं कर सकते।'' लगभग एक घण्टे तक वह इसी बात को दोहराता रहा। सभा की समाप्ति के बाद जब वह द्वार पर प्रत्येक आराधक का अभिवादन कर रहा था, तो उसे दो कुंवारी लड़कियां मिलीं। स्पष्ट था कि उनके विवाह का समय निकट था। उन्होंने कहा, ''प्रचारक भाई, हम इसमें कोई सुधार नहीं करना चाहतीं। हम इसे ऐसे ही मानना चाहती हैं!''

क्या मसीह की कलीसिया के बारे में आपकी भावनाएं यही नहीं हैं? आप इसमें कोई सुधार नहीं कर सकते। वह आपसे अधिक अच्छी तरह जानता है। उसने आपकी आवश्यकताओं के अनुसार अपनी कलीसिया का नमूना बनाया है। मसीह की कलीसिया में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने का अर्थ इसकी ईश्वरीय सम्पूर्णता में से निकालकर उसके स्थान पर मानवीय निर्बलता को डालना है।

मसीह को वैसे ही ग्रहण करें जैसा वह है, और उसके सुसमाचार को मानकर और उसके साथ जीवन बिताकर, वही कलीसिया बने जिसे उसने बनाया था।